Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.712
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2604S01V14P002

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Apr'26
Issue–IV(I), Volume–XIV

रामचरितमानस की वैश्विक प्रासंगिकता

डॉ . अमलपूरे सूर्यकांत विश्वनाथ
एसोसिएट प्रोफेसर तथा हिंदी विभाग प्रमुख,
डॉ . श्री. नानासाहेब धर्माधिकारी कॉलेज कोलाड, तहसील -रोहा, जिला- रायगड
महाराष्ट्र पिन -४०२३०४
मो . ९७६६७३१४७०
Email sureshamalpure05@gmail.com

सारांश :-

वर्तमान युग तीव्र परिवर्तन का योग है जहां विज्ञान तकनीक और भौतिक विकास में मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधा प्रदान की है। आज मनुष्य के पास वह सब कुछ है जिसकी कल्पना कभी संभव प्रतीत होती थी । तेज संचार ,उन्नत चिकित्सा आदि ,इस बाहरी प्रगति के साथ एक गहरी आंतरिक रिक्तता भी जन्म ले चुकी है । जीवन की गति जितनी तेज हुई है मन उतना ही अशांत और स्थिर हो गया है । आध्यात्मिकता केवल एक विकल्प नहीं बल्कि समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बनकर सामने आती है। भारतीय संस्कृति ने आध्यात्मिकता को जीवन का आधार माना है । यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जीवन जीने की एक ऐसी पद्धति है जो व्यक्ति को समय से जोड़ती है ।ध्यान, जप , योग, यज्ञ और सेवा जैसे साधन मनुष्य की भीतर छिपी दिव्यता को जागृत करने का माध्यम बनते हैं । यह साधन केवल परंपरा नहीं बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन के वैज्ञानिक उपाय भी है । जब व्यक्ति नियमित रूप से इसका अभ्यास करता है ,तो उसका मन शांत होता है, विचार शुद्ध होते हैं और जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार होता है। भारतीय संस्कृति की विशाल धारा में कुछ ग्रंथ ऐसे है जो केवल अपने समय के लिए नहीं बल्कि युगों युगों तक मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ बनकर खड़े रहते हैं । रामचरितमानस ऐसा ही एक अमर ग्रंथ है जिसकी रचना महान संत कवि गोस्वामी तुलसीदास ने की है। यह ग्रंथ केवल भगवान राम की कथा कहा काव्यात्मक वर्णन नहीं बल्कि भारतीय जीवन दर्शन का जीवंत प्रतिरूप है और वैश्विक प्रासंगिकता के रूप में उसे देखा जा सकता है।

कुंजी शब्द:- भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता ,वैश्विक प्रासंगिकता, लोकमंगल, मर्यादा पुरुषोत्तम आदि।

संशोधन पद्धति: - सर्वेक्षणात्मक तथा वर्णनात्मक संशोधन पद्धति।

संशोधन के उद्देश्य:-

१) भारतीय ज्ञान परंपरा को देखना।
२)भारतीय ज्ञान परंपरा में रामचरितमानस को देखना।
३) वैश्विक परिदृश्य में रामचरितमानस को देखना।
४) आज के युग में रामचरितमानस की प्रासंगिकता को देखना।
५)वर्तमान समाज को नई दिशा प्रदान करना।

प्रस्तावना:-

भारतीय ज्ञान परंपरा की एक व्यापक पृष्ठभूमि रामचरितमानस में दिखाई पड़ती है। हिंदी साहित्य के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण धारा के निर्विवाद युग दृष्टा के प्रतीक है। तुलसीदास ने साहित्य परंपरा के साथ ही साथ भारतीय ज्ञान परंपरा को भी अपनी रचनाओं में महत्वपूर्ण स्थान दिया है, और साहित्य को एक नई ऊंचाई प्रदान की। अवधी भाषा में रचित महाकाव्य रामचरितमानस की लोकप्रियता इतनी है कि संपूर्ण विश्व में इस ग्रंथ का अमंगल की शांति हेतु अखंड पाठ आयोजित होते रहते हैं। महाकवि तुलसीदास का यह महाकाव्य व्यक्तिगत साधना के साथ-साथ लोक धर्म की जन्मस्थली भी है। रामचरितमानस के राम एवं अन्य पात्र अपने-अपने कर्म क्षेत्र में उस समय आदर्श स्थापित करते हैं जब भारत में इस्लाम की स्थापना के साथ, राज

सिंहासन के लिए भाई- भाई का कत्ल कर रहा था। बेटा, बाप को कैदखाने में डालकर राजगद्दी हड़प रहा था। ऐसी स्थिति में तुलसीदास रामराज्य की स्थापना के लिए इस बिखरे हुए भारतीय जनमानस को एक करने हेतु सबसे बड़े मार्गदर्शक प्रभु श्री राम का चरित्र सामने लाने का कार्य किया हैं। समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए प्रभु श्री राम का चरित्र आदर्श है। जातियों में विभाजित भारतीय जनमानस के लिए प्रभु श्री राम एक समन्वयक की भूमिका में भारतीय समाज के सामने आदर्श व्यक्तित्व के रूप में खड़े दिखाई देते हैं। जहां वे एक आदर्श पुत्र के रूप में, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श स्वामी, आदर्श शिष्य, आदर्श राजा के रूप में समाज के सम्मुख आदर्श प्रस्तुत करते हैं। आज भारतीय जनमानस में राम का चरित्र मापदंड का आधार बन गया है।

वर्तमान समय में हमारा चरित्र नई उपलब्धियों और हलचलों से भरा है, और मानवी जीवन भूमंडलीकरण की दौड़ में हांफ रहा है। फिर भी यह विडंबना ही कही जाएगी कि, आज हमारे सामने सबसे बड़ा संकट मानवीय चरित्र का है। चरित्र किसी भी समाज एवं व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण होता है क्योंकि मनुष्य का चरित्र ही उसका सबसे बड़ा धन होता है। मनुष्य का स्वास्थ्य किसी प्रकार से चला जाए, तो उसे वह पुनः प्राप्त कर सकता है। धन चला जाए तो पुनः धन अर्जित किया जा सकता है, किंतु चरित्र एक बार नष्ट हो जाए तो पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता। जैसे रगड़ने, काटने, पीटने और तपाने और से सोने की परीक्षा होती है, ठीक उसी प्रकार से त्याग शील, गुण और कर्म इन चार गुणों को देखकर ही मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्म की पहचान होती है।

रामचरितमानस की वैश्विक प्रासंगिकता

१) लोकमंगल की भावना :-तुलसीदास कृत रामचरितमानस चरित्र-रक्षा का सबसे बड़ा उदाहरण है क्योंकि राम केवल रामायण के पात्र नहीं हैं बल्कि वास्तविक जीवन के राम व्यक्ति चरित्र है। संपूर्ण भारतीय संस्कृति के लिए राम व्यक्ति चरित्र का उत्तम उदाहरण है। राम द्वारा अपने बाहुबल से जीता गया राज्य लंका को बिना किसी हिचक विभीषण को सौंप देना यह दिखाता है कि यह त्याग अचानक आए हुए उत्साह का परिणाम नहीं है, बल्कि राम के बाल्यकाल से ही क्रमबद्ध सतत चली आती हुई चरित्र विकास का स्वभाव है। उसे हम चौगान के खेल में छोटे भाइयों से जीत कर भी हार मानते हुए बालक, पुत्र एवं शिष्य राम के रूप में देख सकते हैं-

"प्रातकाल उठि के रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा।।
आयसु मागि करहिं पुर काजा। देख चरित हरषइ मन राजा।।"-१

अर्थात प्रातः काल माता-पिता और गुरु का चरण स्पर्श कर, आज्ञा लेकर अपने राज्य का काम करते हैं। राम के इस चरित्र को देखकर राजा अत्यंत प्रसन्न होते हैं।

२) संत परंपरा और आध्यात्मिक संतुलन:- राम तुलसी साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रमुख पात्र हैं। वे शक्ति, शील और सौंदर्य के प्रतिमान हैं। जनकपुर में धनुष यज्ञ के उपरांत, परशुराम और राम के बीच संवाद होता है। जनकपुर में पराक्रम दिखाने वाले राम परशुराम से विनम्रता से बात करते हैं जबकि परशुराम बहुत क्रोधित होते है, लोकमंगल युक्त भावनाएं हिंदी साहित्य के स्वर्णयुगमय भक्ति काल के संतों ने मध्यकाल से लेकर आज तक अपने आध्यात्मिक विचारों की प्रासंगिकता बना रखी है। मुगल, सल्तनत के अत्याचारी शासक कलियुग में दर्शन देते हैं। ऐसी स्थिति में परमात्मा से लीन होते हुए भक्ति का पवित्र मार्ग संतों ने दिखाकर जनता में सकारात्मक सोच निर्माण कर दी। भक्ति काल के संतों की विचारधारा भारतीय ज्ञान परंपरा की एक अनमोल उपहार हैं। दया, क्षमा, परोपकार, करुणा, प्रेम सहिष्णुता आदि गुणों से संपन्न व्यक्ति ही एक अच्छे समाज का निर्माण कर सकता है, यह संतों का विचार आज भी सत्य है तथा भविष्य में भी अनगिनत सालों तक प्रसांगिक बना रहेगा। ईर्ष्या, द्वेष, कपट, दंभ, वैर भाव से रहित मानव जिस समाज में रहते हैं वह अवश्य ही उन्नति करता है, यह संत तुलसीदास की संदेश वाणी जनता का कंठहार हर बन गई थी। ज्ञानाश्रयी शाखा के संत कबीरदास ने प्रकृति में समाए हुए आत्मा-परमात्मा के अद्वैत पर अधिक बल देते हुए नामस्मरण से एकाग्रचित होकर जो भक्ति मार्ग बताया उसकी आज विश्व में सराहना हो रही है। आचरण की शुद्धता, शरणागति एवं आत्मानिवेदन, वैराग्य भाव से ईश्वर में विश्वास

माधुर्य भाव से भक्तिधर्म में एकता, अहिंसा जैसे संदेश परख बातों से विश्व को रूबरू कर दिया है। प्रेमाख्यान काव्य के मलिक मोहम्मद जायसी ने लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना करते हुए प्रेम से संसार को जीतने का मार्ग बताया। जन्म से अंधे होते हुए भी गुरु-संत-प्रभु सेवा को अपनी भक्ति भावना में स्थान देते हुए सूरदास ने सख्यभाव, वात्सल्य भक्ति से परमात्मा भगवान कृष्ण के लीलाओं को व्यक्त करते हुए भक्तिका जो संदेश दिया है वह भारतीय ज्ञान परंपरा में अपूर्व निधि बन गया है। भक्ति कालखंड के संतों के विचारों को संसार अपनाएगा तो सचमुच यह धरती स्वर्ग बन सकती हैं।संत तुलसीदास ने अपने रामचरितमानस रचना से भक्ति के पवित्र मार्ग की सराहना करते हुए एक आदर्श पुत्र, पति, पत्नी, सेवक, राजा, भक्त के महिमा का प्रतिपादन किया है। आज हिंदू देवालय में रामचरितमानस पूजा तो जाता है लेकिन अवश्यकता है रामचरितमानस के उन सभी नैतिक सिद्धांतों का पालन करने की। कलियुग में भक्ति के नाम तथा धर्म, कर्मकांड से जनता को लूटने वाले प्रवृत्ति की आलोचना करते हुए संत तुलसीदास मानमर्षता, भर्त्सना, आश्वासन, मनोराज्य, विचरणा, जैसे भक्ति में स्थित विनय के सात भूमिकाओं को व्यक्त करते हुए जीवन को मोहमाया से बचाकर पारमार्थिक सुख का संदेश देते हैं। तुलसी ने राम, भरत, लक्ष्मण, सीता दशरथ, हनुमान आदि पत्रों के माध्यम से आदर्श संबंधों की परिकल्पना को साकार किया है। आज पारिवारिक संबंधों में संपत्ति के कारण न्यायालय में मौजूद अनगिनत विवादों देखकर तुलसी के रामायण में चित्रित आदर्श संबंधों का स्मरण हो जाता है। बच्चे बड़े होने पर माता-पिता को वृद्धावस्था आश्रम में भेज रहे हैं। मानवी समाज स्वार्थ की कगार पर इतना घुस गया है कि अपना-पराया वह सब भूल गया है। व्यवहार का दर्पण बने रामचरितमानस में तुलसी ने मानव को पवित्र आचरण का उपदेश देकर लोकमंगलकारी समाज की अवधारणा की है। अतः हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने तुलसी जैसे संतों द्वारा बताए गए त्याग, विराग, लोकहित, मानवता के चरम उत्कर्ष के नैतिक मानदंडों को सम्मिलित करके सर्वगुण, संपन्न, सर्वशक्तिमान, शीलवान समाज के निर्माण के लिए प्रेरित किया है।इस स्थिति में लक्ष्मण भले क्रोध में आते हैं, लेकिन राम रंच मात्र भी विचलित नहीं होते बल्कि वे लक्ष्मण को ही रोकते हैं। वे परशुराम की गरिमा को कहीं भी खंडित नहीं होने देते। तब परशुराम कहते हैं कि तुम सचमुच विष्णु के अवतार हो-

"राम रमापति करघन लेहू। खैचहु मिटै मोर संदेहू।
देत चापु आपुहिं चलि गयकापरसुराम मन बिस्मय भयऊ।।"-२

परशुराम का अहंकार राम के पराक्रम को देखकर नष्ट हो जाता है, किंतु राम के भीतर अहंकार का भाव नहीं आता। इतना ही नहीं जन वासियों के सामने जिस तरह से अपने को प्रस्तुत करते हैं वहां भी कोई अहंकार नहीं है। सीता विवाह के उपरांत अयोध्या जाते हैं तो वहां भी अन्य पुत्रों की उपेक्षा कर जेष्ठ पुत्र को ही राज अधिकारी मानने वाली अन्यायपूर्ण प्रथा पर विचार करते हुए युवा राम और फिर पिता के वचनों और माता के प्रति श्रद्धा रखते हुए प्रसन्नता से राज्य छोड़कर बनवासी राम में कहीं भी न तो अहंकार का भाव आता है, और न ही ईर्ष्या का भावा यहां तक की माता कैकई के प्रति भी मन में वही सम्मान है। जब वापस जाने का समय आता है। तब राम स्वयं माता कैकई के पास आते हैं और कहते हैं-"भरत मातु पद बंदि प्रभु सुचि सनेहैं मिलि भेंटि।
बिदा कीन्ह सजि पालकी सकुच सोच सब मेटि।।"-३

अर्थात् माता कैकई के मन के सारे संकोच और सोच को निकालकर पालकी सजाकर आदरपूर्वक विदा करते हैं। यही नहीं, कैकई की जिस दासी (मंथरा) के कारण राजा दशरथ के परिवार में यह विवाद खड़ा होता है, उसके प्रति भी राम के मन में कोई दुर्भावना नहीं है। संपूर्णता में देखा जाए तो राम अयोध्या से वन के लिए जाते हैं तो उस समय वे राजकुमार राम होते हैं। उसके पश्चात् निषादराज नदी पार कराते हैं तो वे तपस्वी राम बनते हैं और जब १४ वर्ष बनवास के उपरांत वापस अयोध्या आते हैं तब वे मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहलाते हैं।

३) आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम:- 'मानस' तुलसी का चरित प्रधान महाकाव्य है। इस महान ग्रंथ में राम के चरित्र की प्रधानता के साथ-साथ अनेक ऐसे पात्रों का भी चित्रण हुआ है। जो अपने चरित्र के कारण सगति की ओर बढ़ते

दिखाई देते हैं। अत्याचार की सारी सीमाएं लांघ जाता है और महापापी होकर मृत्यु को प्राप्त करता है। वह अपने कर्म को जानता है इसलिए अपनी सगति प्राप्त करने के लिए अत्याचार करता है। ताकि राम उसके अत्याचारों के लिए उसे शीघ्र ही मुक्ति प्रदान करें। रामचरितमानस के किसी भी पात्र के चरित्र में किसी भी प्रकार का संशय दिखाई नहीं पड़ता। सभी के सभी पात्र निर्भीक हैं। वह कभी भी असमंजस की स्थिति में दिखाई नहीं पड़ते। लक्ष्मण, भरत, हनुमान, अंगद, सुग्रीव, कैकेई, कौशल्या, मंधरा शूर्पणखा, रावण, मेघनाथ, मंदोदरी सभी स्त्री-पुरुष पात्र व्यक्तिगत विशेषताएं रखते हुए भी मानव जीवन की एक विशेष स्थिति में आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

४) ज्ञान और भक्ति का समन्वय:- लोक धर्म और समाज की दृष्टि से मानस के पात्रों में भरत महत्वपूर्ण पात्र हैं। भरत के कारण राम को वनवास मिलता है। यह बात भरत को जब पता चलती है तो वे तुरंत ही अपनी माता से संबंध तोड़ लेते हैं और व्यथित अयोध्या वासियों के साथ राम को मनाने चित्रकूट जाते हैं, और राम के सामने अपना हृदय खोल कर रख देते हैं-

"सानुज पठइअ मोहि बन कीजिए सबहि साथ।
नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलीं मैं साथ।।"-४

इस तरह भरत संपूर्ण समाज के सामने अपने बड़े भ्राता राम के समक्ष जिस श्रद्धा भाव से नतमस्तक होते हैं, वह वर्तमान भारतीय जनमानस के लिए अप्रतिम है। रामचरितमानस में तुलसीदास ने भरत के चरित्र को निश्चित रूप से अपने महाकाव्य के अनुरूप ही गढ़ा है। भरत का त्याग इतना बड़ा है, कि उनके सामने प्रभु श्री राम असमंजस में पड़ जाते हैं। मानस में तुलसीदास ने लक्ष्मण को पर्याप्त जगह दी है। सीता और राम के साथ लक्ष्मण भी प्रमुख पात्र के रूप में हमारे सामने आते हैं। लक्ष्मण अपने सूझबूझ, त्याग एवं सेवा धर्म के कारण राम के प्रिय बनते हैं और एक अनुज के रूप में भारतीय समाज के लिए आदर्श पात्र दिखाई पड़ते हैं। इन विशेष पात्रों के साथ ही मानस में गौड़ पात्रों के चरित्र को भी महाकवि तुलसीदास अपनी सूझ-बूझ के साथ भारतीय जनमानस के सामने जीवन के विभिन्न पक्षों को खोलने के लिए प्रस्तुत करते हैं। मंथरा, शूर्पणखा आदि सी पात्र बहुत कम समय के लिए हमारे सामने आती हैं लेकिन इसके बावजूद हमारे मानस पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाती हैं। दरअसल यह दोनों स्त्री पात्र आज भारतीय जनमानस में प्रतीक बन गई हैं। यही स्थिति कैकई की भी है। जहां तक बात कौशल्या की है वे केवल राम की माता के रूप में ही नहीं बल्कि राजरानी के रूप में भी मानस के माध्यम से हमारे सामने दिखाई पड़ती हैं। राजा दशरथ को महाकवि ने एक प्रतापी राजा के रूप में आदर के साथ मानस में चित्रित किया है जो नियति के चक्र में फंस कर रह जाते हैं।मानस में तुलसीदास ने पुरुष गौण पात्रों में केवट, निषाद, कोल, किरात आदि का चरित्र-चित्रण जिस कुशलता एवं मार्मिकता के साथ किया है वह दर्शनीय है-

"तुम्ह प्रिय पाहुने वन पगु धारे। सेवा जोग न भाग हमारे।।
देब काह हम तुम्हहि गोसाईं ईंधनु पात किरात मितालीं।।"-५

रामचरितमानस ऐसा ही एक अमर ग्रंथ है, जिसकी रचना महान संत-कवि गोस्वामी तुलसीदास ने की। यह ग्रंथ केवल भगवान राम की कथा का काव्यात्मक वर्णन नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का जीवंत प्रतिरूप है।चार शताब्दियों से अधिक समय बीत जाने के बाद भी रामचरितमानस की महिमा और प्रभाव अक्षुण्ण है।

५)आधुनिक युग और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में:- रामचरितमानस आज के इस आधुनिक युग में पुनः समझने की आवश्यकता है,क्योंकि यह ग्रंथ केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के लिए नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन का अमूल्य स्रोत है।

६)लोकभाषा में धर्म का लोकमंगल :- जब गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की, तब भारतीय समाज अनेक प्रकार की विघटनकारी परिस्थितियों से गुजर रहा था। उस समय धर्म का ज्ञान मुख्यतः संस्कृत ग्रंथों तक सीमित था, जो सामान्य जन के लिए सहज उपलब्ध नहीं था।तुलसीदास ने लोकभाषा में रामकथा का अमृत प्रवाहित

कर धर्म को जन-जन तक पहुँचाया। यह केवल साहित्यिक क्रांति नहीं थी, बल्कि एक गहरा सांस्कृतिक पुनर्जागरण था। रामचरितमानस ने भारतीय समाज को एक साझा आध्यात्मिक आधार प्रदान किया।

७)मर्यादा का वैक्षिक आदर्श:- मानस का केंद्रीय तत्व है मर्यादा। इस ग्रंथ में श्रीराम को पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है।श्रीराम का जीवन यह बताता है कि महानता केवल शक्ति या वैभव में नहीं, बल्कि मर्यादा और कर्तव्यपालन में निहित है। वे पिता की आज्ञा के लिए, राज्य त्याग देते है, प्रथा के सुख के लिए अपने व्यक्तिगत भावों को भी पीछे रख देते हैं और अपने जीवन के प्रत्येक निर्णय में धर्म की मर्यादा का पालन करते हैं।आज जब विश्व में नैतिक मूल्यों का संकट दिखाई देता है, तब राम का यह आय नेतृत्व और जीवन-दृष्टि विश्व समाज के लिए प्रेरणा बन सकती है।आदर्श शासन और रामराज्य की अवधारणा रामचरितमानस में वर्णित राम राज्य केवल धार्मिक कल्पना नहीं, बल्किआदर्श शासन व्यवस्था की एक उच्च अवधारणा है।तुलसीदास रिषखते हैं-

"दैहिक दैविक भौतिक तापा।
रामराज नहि काहुहि व्यापा।।"-६

अर्थात् उस राज्य में किसी को भी शारीरिक, दैविक या भौतिक कष्ट नहीं होला। वहाँ न्याय, समता और करुणा का शासन होता है। आज के लोकतांत्रिक और वैश्विक समाज में भी यह विचार अत्यंतप्रासंगिक है कि शासन का उद्देश्य केवल सत्ता प्राप्त करना नहीं, बल्कि जन कल्याण और सामाजिक संतुलन स्थापित करना होना चाहिए।

८)मानव संबंधों का दिव्य दर्शन:- रामचरितमानस मानव संबंधों की गहन व्याख्या भी प्रस्तुत करता है। इसमें प्रत्येक चरित्र जीवन के किसी न किसी आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है।सीता-त्याग, धैर्य और पवित्रता की मूर्तिलक्ष्मण - सेवा और समर्पण का आदर्श भरत - भ्रातृभक्ति और त्याग का प्रतीक ,हनुमान-भक्ति, शक्ति और कर्मयोग का अद्भुत समन्वय है। इन चरित्रों के माध्यम से तुलसीदास यह स्पष्ट करते हैं कि समाज की स्थिरता केवल कानूनों से नहीं, बल्कि चरित्र की महानता से होती है।

९)सामाजिक समरसता का संदेश:- रामचरितमानस का एक महत्वपूर्ण संदेश सामाजिक समरसता है। इसमें समाज के सभी वर्गों के प्रति सम्मान और करुणा का भाव दिखाई देता है।जब श्रीराम वन में शबरी के जूठे बेर प्रेम से स्वीकार करते हैं, तब यह प्रसंग केवल भक्ति का नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और प्रेम का एक महान प्रतीक बन जाता है। तुलसीदास कहते हैं-

"परहित सरिस धरम नहि भाई।
पर पीड़ा सम नहि अधमाई।।"७

यह शिक्षा मानव समाज के लिए सार्वभौमिक नैतिकता का संदेश देती है।

१०)आधुनिक युग में आध्यात्मिक संतुलन:-आज का युग विज्ञान और तकनीक की अद्भुत प्रगति का युग है, किन्तु इसके साथ ही यह मानसिक तनाव, असंतोष और आत्मिक शून्यता का भी युग बनता जा रहा है। ऐसे समय में रामचरितमानस भक्ति और नाम-स्मरण के माध्यम से जीवन को संतुलन और शांति प्रदान करने का मार्ग दिखाता है।तुलसीदास का यह कथन आज भी उतना ही सार्थक है-

"राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।"-८

अर्थात् यदि मनुष्य अपने जीवन में रामनाम का दीप प्रज्वलित करे, तो उसके अंत करण का अंधकार दूर हो सकता है।

११)विश्व संस्कृति में रामकथा का विस्तार:- आज रामकथा केवल भारत तक सीमित नहीं रही। श्रीराम की कथा औररामचरितमानस का प्रभाव विश्च के अनेक देशों में दिखाई देता है। विशेष रूप से-नेपाल, थाईलैंड, इंडोनेशिया, मौरीशस, फिजी इन देशों में रामकथा नृत्य, नाटक, साहित्य और सांस्कृतिक उत्सवों के रूप में जीवित है। यह तथ्य दर्शाता है कि रामचरितमानस केवल भारतीय संस्कृति की धरोहर नहीं, बल्कि विश्व संस्कृति की भी एक अमूल्य निधि है।

निष्कर्ष:-

उपर्युक्त विवेचन के अनुरूप हम निष्कर्ष स्वरूप से कह सकते हैं कि,भारतीय संत परम्परा ने सदैव रामचरितमानस को केवल एक काव्य ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि साधना के मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया है। अनेक संतों और आचार्यों ने मानस को आत्मशुद्धि, भक्ति और लोकमंगल का आधार माना। संत परम्परा का विश्वास है कि मानस केवल पढ़ने का ग्रंथ नहीं, बल्कि जीने का ग्रंथ है। इसके प्रत्येक प्रसंग में जीवन के लिए एक आध्यात्मिक संकेत छिपा हुआ है। ७०० वर्ष पूर्व रचित रामचरितमानस आज भी उतना ही प्रासंगिक और प्रेरणादायक है जितना उसके रचना काल में था। इसका कारण यह है कि यह ग्रंथ किसी विशेष समय, समाज या देश तक सीमित नहीं, बल्कि मानव जीवन के शाश्वत मूल्यों का उद्घोष करता है। आज जब विश्व नैतिक और आध्यात्मिक संतुलन की खोज में है, तब रामचरितमानस का संदेश मानवता के लिए मार्गदर्शक प्रकाश बन सकता है।

संदर्भ सूची:-

१) रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास, बालकांड , पृ.१६७, गीता प्रेस, गोरखपुर
२) रामचरितमानस गोस्वामी तुलसीदास बालकांड गीता प्रेस, गोरखपुर पृ. २४०
३) रामचरितमानस : गोस्वामी तुलसीदास, अयोध्याकाण्ड, पृष्ठ-५५९
४) रामचरितमानस-अयोध्याकांड, गीता प्रेस, गोरखपुर पृ.६१८,
५) वही पृ.५०४
६) वही पृ.६०२
७) वही पृ.६७८
८) वही पृ.५६४